|  |
| --- |
| 24. Juni 2022 |
| **Hochfest Heiligstes Herz Jesu C** |
| Erste Lesung: Ez 34, 11-16; Zweite Lesung: Röm 5,5b-11; Evangelium: Lk 15,3-7 |
|  |  |  |
| Eröffnung: | GL 771 | Dem Herzen Jesu singe |
|  |  |  |
| Kyrie: | 161 | Du rufst uns, Herr |
|  |  |  |
| Gloria: | GL 173, 1+2 | Gloria … Ehre sei Gott |
|  |  |  |
| Antwortgesang: | Psalm 23, 1-6 |  |
|  | Kehrvers:  |  |
|  | GL 37, 1 | Der Herr ist mein Hirt |
|  | oder Psalmlied: |  |
|  | GL 421, 1+2 | Mein Hirt ist Gott der Herr |
|  |  |  |
| Halleluja-Ruf: | 174, 1 |  |
|  | Vers: |
|  | *So spricht der Herr:* |
|  | *Ich bin der gute Hirt.* |
|  | *Ich kenne die Meinen, und die Meinen kennen mich.* |
|  |  |  |
|  | *So spricht der Herr:* |
|  | *Nehmt mein Joch auf euch und lernt von mir.* |
|  | *Denn ich bin gütig und von Herzen demütig.* |
|  |  |  |
| Credo: | GL 180, 1+2 | Credo in unum Deum |
|  |  |  |
| Gabenbereitung: | GL 371, 1-3 | Herz Jesu, Gottes Opferbrand |
|  |  |  |
| Sanctus: | GL 703 | Heilig |
|  |  |  |
| Agnus Dei: | GL 747 | Gottes Lamm, Herr Jesu Christ |
|  |  |  |
| Danksagung:  | GL 359, 1-4 | O selger Urgrund allen Seins |
|  | GL 369, 1+2 | O Herz des Königs aller Welt |
|  | GL 772, 4-5 | Gelobt sei Jesus Christus |
|  |  |  |
| Schluss: | GL 749, 1+2+7 | Des Königs Banner wallt empor |